त्यौहारों की यादें

# दिवाली गई बचा क्या?

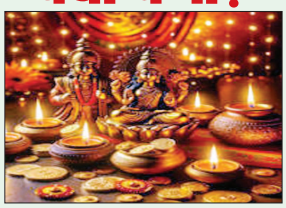

साल भर इंतजार के बाद दिवाली आई और आकर चली भी गई। सबने नए कपड़े पहने, फोटो खिंचाई, रील बनाई, फेसबुक-इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया और खा-पीकर सो गए। तैयार होने के बाद दिवाली पर पूजा करना भी जरूरी होता है। आखिर लक्ष्मी माता को बुलाना जो होता है। लेकिन लक्ष्मी माता भी लकदक लोगों को देखकर सोचती होंगी कि इनके पास क्या जाना, ये तो पहले से ही संतुष्ट लोग हैं। फिर वे अपने उल्लू को इशारा करती हैं कि जरा उधर चलो, जहां बाबाओं के आश्रम हैं, एंटीलिया जैसे महल हैं और करोड़ों की गाड़ियां हैं। आखिर लक्ष्मी माता की सबसे ज्यादा जरूरत तो इन्हीं लोगों को है। इनके पास रहेंगी तो सुरक्षित भी रहेंगी।

गरीब और मिडिल क्लास का कोई भरोसा नहीं। गरीब के पास रहो तो वह दारू पीकर या जुआ खेलकर खर्च कर देगा। मिडिल क्लास कर्ज लेकर कार, आईफोन और स्मार्ट टीवी जैसी चीजें खरीद लेगा और फिर हर महीने कलपता रहेगा। इससे तो अच्छा है कि अडानी-अंबानी के घर ही रहा जाए। मिडिल क्लास का आदमी दिवाली की अगली सुबह सोकर उठता है तो कमरे में बिखरे कपड़े और सड़क पर जले हुए पटाखों के अवशेष देखकर सोचता है, मजाक-मजाक में बहुत खर्चा हो गया यार!

बस्ती के छोटे बच्चे पटाखों के उस ढेर में बचे-खुचे साबुत पटाखे तलाश रहे हैं। नगर निगम के सफाई कर्मचारी हर घर का दरवाजा खटखटा रहे हैं, बख्शीश की उम्मीद में। थोड़ी मिठाई और पचास-सौ रुपये से उनकी दिवाली कुछ और उजियारी हो जाएगी।

असली दिवाली तो अमीरों की होती है। डिजाइनर ड्रेस, महंगी ज्वेलरी, महल जैसे घर जगमगाते हुए और हाथ में फुलझड़ी लेकर फोटो। लक्ष्मी जी, जीवन हो तो ऐसा!

वह जिंदगी भी क्या जिंदगी है, जो सरयू के किनारे बुझते हुए दीयों से तेल इकट्ठा करके बीते। उस पर भी पुलिस वाले डंडा लेकर दौड़ाते रहें कि सरकारी तेल है बेटा! इसे गरीब-गुरबे नहीं, हम सरकारी लोग इस्तेमाल करते हैं। भगवान के बाद इस पर हमारा अधिकार है।

एक बच्ची आधी रात को सबकी नजर बचाकर एक पानी की बोतल में तेल भरकर बस निकलने ही वाली थी कि एक स्वयंसेवक की नजर उस पर पड़ गई। उसने लाठी लेकर उसे दूर तक दौड़ाया, लेकिन लड़की कुछ ज्यादा ही फुर्तीली निकली। निकल गई। वह स्वयंसेवक अपने साथी से अफसोस जता रहा है कि भगवान के दिए का तेल चोरी हो गया। उसे मंदिर में हुई चंदे की चोरी से इतना दुख नहीं हुआ था, जितना आज एक लीटर तेल के चोरी हो जाने से हुआ है।

दिवाली तो ऐसे बीत गई, लेकिन अभी दो दिन के त्योहार बाकी हैं। आज गोवर्धन पूजा है। वैसे तो यह गांव-देहात और बस्ती का त्योहार है। मेट्रो सिटी में रहने वालों और छोटे शहरों की बड़ी-बड़ी कवर्ड कॉलोनियों में रहने वालों का इस पर्व से कोई खास वास्ता नहीं रह गया है।

कल भाई दूज होगी, जो कुछ प्रदेशों में मनाई जाती है। राखी पर भाई बहन को उपहार देता है, लेकिन दूज पर बहन भाई को देती है।

दिवाली के बाद वाली सुबह बड़ी आलस भरी होती है। लगता है जैसे शरीर टूट रहा हो। कोई काम करने का मन नहीं होता। बस पूजा समेटनी है और बची हुई मिठाइयों को खत्म करने के लिए उन घरों की सूची बनानी है, जहां दिवाली मिलने जाना है। वैसे वाट्सऐप के जमाने में अब कौन किसी के घर जाता है! फिर भी कुछ जगह जाना जरूरी होता है। एक पैकेट देना है और एक लेना है। पहले स्टील के डिब्बों में मिठाई का आदान-प्रदान होता था। तब मिठाई से ज्यादा डिब्बे की फिक्र रहती थी कि वापस आएगा भी या नहीं। भला हो डिजाइनर कागज के डिब्बों का, अब लेना-देना आसान हो गया है। ताश खेलने की परंपरा भी अब लुप्त होने लगी है। उसकी जगह ड्रीम इलेवन और आईपीएल ने ले ली है। लोगों को शायद अब उनमें ज्यादा फायदा नजर आता है। दूसरे, अब परिवार भी पहले की तरह इकट्ठा कहां होता है! सबके पास समय की कमी है।

इस दिवाली पर देश की अर्थव्यवस्था में गजब का उछाल आया है। गाड़ियां, इलेक्ट्रॉनिक्स, सोना-चांदी सब खूब बिके हैं। ऐसा आंकड़े बता रहे हैं। बाकी छोटे व्यापारियों की हालत तो कल रात भी पहले जैसी ही थी।

पोर्च में एक टोकरी में कल के थोड़े बचे हुए पटाखे रखे हैं। दीये बुझकर काले पड़ गए हैं। रंगोली के बीच गेंदे का एक फूल ओस में भीगा हुआ पड़ा है। चलिए, अब सफाई में लगा जाए।



श्रीमती जी किचन से बड़बड़ा रही हैं, 'सुबह हुई नहीं कि मोबाइल हाथ में चिपक जाता है। जाने क्या लिखते रहते हैं, कोई छापता तो है नहीं। बस फेसबुक पर पोस्ट करके खुश होते रहते हैं! अच्छा मित्रों, दिवाली की हार्दिक बधाई!

**उसंजय मृदुल**

# नालंदा का रहस्य....

वह जगह जहाँ ज्ञान की कोई सीमा नहीं थी द्य कभी-कभी इतिहास राजमहलों की ऊँची दीवारों में नहीं, बल्कि मिट्टी में दबी एक छोटी-सी ईंट में छिपा होता है। सुबह की सुनहरी धूप बिहार की धरती पर फैल रही थी। श्याम अपनी दादी के साथ एक विशाल ऐतिहासिक परिसर में खड़ा था। चारों ओर पुरानी लाल ईंटों की दीवारें, टूटे हुए गलियारे और सदियों पुराने अवशेष दिखाई दे रहे थे।

श्याम ने चारों ओर देखा और पूछा, 'दादी, लोग यहाँ इतनी दूर से क्या देखने आते हैं? यहाँ तो सिर्फ पुरानी ईंटें हैं।'

दादी ने जमीन से एक ईंट का टुकड़ा उठाया, 'तुम्हें इसमें सिर्फ ईंट दिखाई दे रही है?'

'हाँ।'

दादी मुस्कुराईं, 'मुझे इसमें हजारों विद्यार्थियों के कदमों की आवाज सुनाई देती है।'

श्याम हँस पड़ा, 'ईंट में आवाज?'

'इतिहास समझने वाली आँखें हों,' दादी ने कहा, 'तो हर पत्थर बोलता है।' फिर उन्होंने सामने फैले खंडहरों की ओर इशारा किया, 'श्याम, तुम नालंदा में खड़े हो।'

श्याम अचानक गंभीर हो गया। नालंदा का नाम उसने किताबों में पढ़ा था, लेकिन आज वह उसी धरती पर खड़ा था जहाँ कभी ज्ञान का एक विशाल केंद्र जीवित था।

दादी बोलीं, 'नालंदा केवल कोई पुराना भवन नहीं था। यह एक विशाल शैक्षणिक और मठीय परिसर था।'

पुरातात्त्विक प्रमाण बताते हैं कि यहाँ व्यवस्थित विहार, मंदिर, स्तूप और आवासीय संरचनाएँ थीं। ह्वेनसांग के अनुसार नालंदा लगभग आठ शताब्दियों तक ज्ञान के आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण केंद्र रहा।

श्याम की आँखों में चमक आ गई, 'क्या दूसरे देशों से भी लोग यहाँ आते थे?'

'हाँ,' दादी ने कहा। 'नालंदा की प्रसिद्धि भारत से बाहर तक पहुँची थी।'

श्याम उन दीवारों को देखने लगा। उसे लगा जैसे कभी यहाँ विद्यार्थियों की आवाजें गूँजती रही होंगी। कहीं गुरु पढ़ा रहे होंगे। कहीं किसी कठिन प्रश्न पर बहस हो रही होगी। कहीं कोई युवा विद्वान भविष्य के ज्ञान की नींव रख रहा होगा। लेकिन दादी अचानक चुप हो गईं।

श्याम ने पूछा, 'क्या हुआ?'

दादी ने धीरे से कहा, 'नालंदा की कहानी जितनी महान है, उसका अंत उतना ही दुखद है।'

श्याम ने उनकी ओर देखा, 'क्या हुआ था?'

'समय बदला। राजनीतिक परिस्थितियाँ बदलीं और धीरे-धीरे यह महान संस्थान उजड़ गया।'

कुछ क्षण दोनों खामोश रहे। फिर दादी ने अपने बैग से एक पुरानी डायरी निकाली। श्याम ने पूछा, 'यह किसकी है?'

'तुम्हारे परदादा की।'

'उन्होंने इसमें क्या लिखा था?'

दादी ने डायरी का आखिरी पन्ना खोला। उस पर लिखा था– 'जिस दिन श्याम नालंदा को अपनी आँखों से देखेगा, उस दिन उसे वह संदूक देना।'

श्याम स्तब्ध रह गया, 'मेरा नाम?'

दादी ने कोई उत्तर नहीं दिया, 'परदादा को कैसे पता था कि मैं यहाँ आऊँगा?'



दादी ने केवल इतना कहा, 'घर लौटकर तुम्हें सब पता चलेगा।'

श्याम ने आखिरी बार नालंदा के खंडहरों की ओर देखा। उसे पहली बार महसूस हुआ, शायद इतिहास केवल अतीत नहीं होता। कभी-कभी वह वर्तमान के दरवाजे पर भी दस्तक देता है।

उस रात श्याम को नींद नहीं आई।घर के पुराने कमरे में रखा संदूक बार-बार उसकी आँखों के सामने आ रहा था।

आखिर उसने दादी से पूछ ही लिया, 'दादी, वह संदूक कहाँ है?'

दादी कुछ देर चुप रहीं। फिर बोलीं, 'मेरे साथ आओ।'

वे घर के उस कमरे में पहुँचीं जहाँ वर्षों से कोई नहीं जाता था। एक कोने में धूल से ढका हुआ लकड़ी का संदूक रखा था। उस पर लोहे की पट्टियाँ लगी थीं।

श्याम ने पूछा, 'यही है?'

दादी ने सिर हिलाया, 'तुम्हारे परदादा ने इसे मुझे दिया था। और कहा था कि मैं इसे कब खोलूँ?'

'जब श्याम नालंदा देखकर लौटे।' दादी ने ताला खोला। क्लिक! संदूक खुल गया। श्याम आगे झुक गया।

अंदर सोना नहीं था। न कोई कीमती गहना। न कोई हथियार। अंदर थे– कागज, एक छोटी धातु की पट्टिका, तांबे का एक टुकड़ा और कुछ हस्तलिखित पन्ने।

श्याम निराश हुआ, 'बस?'

दादी हँस पड़ीं, 'तुम्हें खजाना चाहिए था?'

श्याम चुप रहा। दादी ने एक पन्ना उठाया, 'तुम्हारे परदादा कहा करते थे–सबसे बड़ा खजाना वह होता है जो इंसान के सोचने का तरीका बदल दे।'

उन्होंने पन्ना श्याम को दिया। उस पर लिखा था– 'नालंदा में धन का खजाना नहीं था। वहाँ विचारों का खजाना था।'

श्याम ध्यान से पढ़ता रहा। अगले पन्ने पर नालंदा के बारे में कुछ ऐतिहासिक टिप्पणियाँ थीं। दादी बोलीं,

'तुम्हारे परदादा इतिहास के विद्यार्थी थे। उन्होंने जीवन का एक हिस्सा प्राचीन भारतीय शिक्षा परंपरा को समझने में लगाया था।'

'तो यह पट्टिका?'

'उन्होंने इसे एक पुराने संग्रह में देखा था। बाद में इसकी प्रतिकृति उनके पास आई। लेकिन उन्होंने कभी इसे किसी रहस्यमय प्राचीन खजाने के रूप में प्रस्तुत नहीं किया।

श्याम ने पूछा, 'क्यों?'

दादी ने गंभीर होकर कहा, 'क्योंकि इतिहास में कल्पना और प्रमाण के बीच बहुत बड़ा अंतर होता है।'

यह बात श्याम के मन में बैठ गई। दादी ने आगे कहा,

'भारत का गौरव दिखाने के लिए झूठी कहानियाँ बनाने की जरूरत नहीं। हमारा वास्तविक इतिहास ही अद्भुत है।'

श्याम ने पूछा, 'फिर परदादा ने यह सब मेरे लिए क्यों रखा?'

दादी ने डायरी का एक और पन्ना खोला। उस पर लिखा था, 'नई पीढ़ी को केवल यह मत बताना कि हमारा अतीत महान था। उसे यह भी बताना कि महानता का अर्थ ज्ञान की खोज है।'

श्याम की आँखें चमक उठीं। तभी बाहर तेज हवा चली। खिड़की खुल गई। डायरी के पन्ने तेजी से पलटने लगे। एक पन्ना जमीन पर गिरा। श्याम ने उसे उठाया।

उसके पीछे केवल एक शब्द लिखा था– 'सत्य।'

श्याम ने दादी की ओर देखा। दादी मुस्कुराईं, 'अब तुम्हारी यात्रा शुरू हुई है।'

अगली सुबह श्याम ने निश्चय किया कि वह नालंदा के बारे में केवल कहानी नहीं सुनेगा। वह प्रमाण देखेगा।

दादी उसे फिर नालंदा लेकर गईं। इस बार श्याम की नजर अलग थी। वह दीवारों को केवल खंडहर नहीं समझ रहा था। वह उनके पीछे छिपी सभ्यता को समझने की कोशिश कर रहा था। उन्होंने संग्रहालय और पुरातात्त्विक अवशेष देखे। ईंटों से बने विशाल परिसर को देखकर श्याम ने पूछा, 'दादी, क्या सच में यहाँ इतने सारे लोग रहते और पढ़ते थे?'

दादी ने कहा, 'पुरातात्त्विक प्रमाण इसी विशाल संस्थागत परिसर की ओर संकेत करते हैं। लेकिन हर लोकप्रिय कहानी को किना प्रमाण के सच मानना सही नहीं।'

श्याम ने सिर हिलाया। कुछ देर बाद उसने पूछा, 'दादी, फिर नालंदा का सबसे बड़ा अजूबा क्या है?'

दादी ने उत्तर दिया– 'यह कि इतने पुराने समय में भी मनुष्य ने ज्ञान को संगठित रूप से खोजने, सिखाने और सुरक्षित रखने की विशाल व्यवस्था बनाई।'

श्याम ने चारों ओर देखा, 'यही?'

'यही सबसे बड़ा अजूबा है।' दादी बोलीं,

'हम अक्सर चमत्कार खोजते हैं। लेकिन कभी-कभी वास्तविक चमत्कार मनुष्य की बुद्धि और मेहनत होती है। फिर उन्होंने उसे नालंदा की ऐतिहासिक परंपरा के बारे में बताया। दूर देशों से आए यात्रियों के विवरण, विद्वानों की यात्राएँ, शिक्षा की परंपरा और विशाल परिसर–इन सबने नालंदा को इतिहास में विशेष स्थान दिया।

श्याम ने धीरे से कहा, 'तो भारत का गौरव सिर्फ यह नहीं कि नालंदा बहुत बड़ा था...'

'बिल्कुल।'

'बल्कि यह कि यहाँ ज्ञान को महत्व दिया जाता था।'

दादी ने मुस्कुराकर कहा, 'अब तुम समझने लगे हो।'

उस शाम श्याम ने परदादा की डायरी फिर खोली। इस बार एक छोटा-सा मुड़ा हुआ कागज मिला। उस पर लिखा था– 'यदि कभी श्याम पूछे कि भारत का सबसे बड़ा अजूबा क्या है, तो उसे किसी महल में मत ले जाना। उसे किसी विद्वान की कहानी सुनाना।'

श्याम बहुत देर तक उस पन्ने को देखता रहा। फिर उसने दादी से पूछा, 'दादी, परदादा किस विद्वान की बात कर रहे थे?'

दादी ने कहा, 'अभी नहीं।'

'क्यों?'

दादी ने डायरी बंद कर दी, 'क्योंकि नालंदा की कहानी पहले पूरी समझो।'

श्याम ने पूछा, 'और उसके बाद?'

दादी ने आसमान की ओर देखा, 'उसके बाद हम उस व्यक्ति की ओर चलेंगे जिसने धरती से आकाश की दूरी को गणित में समझने की कोशिश की।'

श्याम चौंका, 'कौन?'

दादी ने केवल एक नाम लिया, 'आर्यभट।'

श्याम की आँखों में उत्सुकता चमक उठी। लेकिन दादी ने कहा, 'पहले नालंदा को विदा करो।'

कुछ दिन बाद श्याम ने अपने विद्यालय में एक छोटा कार्यक्रम आयोजित किया। उसने बच्चों के सामने नालंदा की तस्वीर लगाई। फिर पूछा, 'भारत की सबसे बड़ी संपत्ति क्या है?'

एक बच्चे ने कहा, 'सोना।'

दूसरे ने कहा, 'हीरे।'

तीसरे ने कहा, 'जमीन।'

श्याम मुस्कुराता द्य उसने बोर्ड पर एक शब्द लिखा–

ज्ञान और कहा, 'हमारा इतिहास हमें केवल गर्व करना नहीं सिखाता। वह हमें सीखने की जिम्मेदारी भी देता है।'

उसने बच्चों को नालंदा की कहानी सुनाई। लेकिन उसने एक बात विशेष रूप से कही– 'जो बात प्रमाणित है, उसे सत्य कहो। जो प्रमाणित नहीं है, उसे कहानी या संभावना कहो। अपने इतिहास का सम्मान करने का सबसे अच्छा तरीका है–उसके साथ ईमानदार रहना।'

पीछे बैठी दादी की आँखों में आँसू आ गए। उन्हें लगा कि आज श्याम ने अपने परदादा की इच्छा पूरी कर दी।

रात श्याम ने संदूक को फिर खोला। अंदर अब कुछ भी रहस्यमय नहीं लग रहा था। वह समझ चुका था–संदूक में कोई सोने का खजाना नहीं था। वह एक विचार का संदूक था। ज्ञान का। सत्य का। और अपनी व. रासत को समझने का।

**राजीव कुमार ,**
**कार्मिक नगर धनबाद**
**Mob..**9031666344

# हमर देवारी

हमर छत्तीसगढ़ ह तीज-तिहार के धनी प्रदेश आय। माटी महतारी के सेवा ले जुड़े आनी बानी के परब देखे बर मिलथे। इहां के माटी म संस्कृति के महक, लोकजीवन म परंपरा के मिठास अउ मनखे मन के हृदय म अपन पुरखा मन के संस्कार बसे हे। इहां हर तिहार के अपन अलग महत्ता अउ पहिचान हे। ए सबो तिहार म देवारी के विशेष महत्व हे। देवारी केवल दीया जलाय के, मिठाई बांटे के या खुसी मनाय के तिहार नइ हे, भलकुन ये हमर लोकसंस्कृति, गौसेवा, कृषि परंपरा, लोकनाथ अउ सामाजिक एकता के अनूठा संगम आय।

छत्तीसगढ़ के गांव-गंवई म यादव समाज के देवारी मनाय के परंपरा बहुत ही मनमोहक अउ अनोखा हे। ए तिहार म यादव भाई मन भगवान श्रीकृष्ण के ग्वाल-बाल स्वरूप ल अपन भीतर धारण करके नाचत-गावत, दोहा पारत अउ अपन आराध्य देवता के पूजा-अर्चना करत गांव के हर घर म मंगलकामना ले पहुंचथें।

देवारी के दिन सबले पहिली भगवान शंकर अउ माता पार्वती के स्वरूप ईशर-गौरा-गौरी के विधि-विधान ले पूजा करके विसर्जन करे जाथे। ओकर बाद यादव भाई मन श्रीकृष्ण के रूप धारण करके अपन पारंपरिक वेशभूषा म सजथें। हाथ म लाठी, माथ म पगड़ी अउ मन म उत्साह के उमंग ले ढोल-मांदर के थाप म नाचत-कूदत साहंडा देवता के पूजा करथें। साहंडा देवता ल सोहई पहिराके आशीष मांगथें अउ फेर अपन-अपन ठाकुर घर के यात्रा शुरू करथें।

**दोहा के मधुर स्वर ले गूंज उठथे गांव के गली**-यादव भाई मन जब पहिली घर के मोहरी म पहुंचथें, तब दोहा पारके अपन आगमन के सूचना देथें। ओमन के स्वर म लोकजीवन के मिठास अउ पुरखा मन के परंपरा के गूंज सुनाई देथे।

अखरी लगे बखरी मालिक, तीर-तीर लगे केवरे।
खोल दे मालिक केकती केवड़ा, पहुंचे अहीर ग्वाले।।

दोहा के आवाज सुनतेच घर के ठाकुर मन अगवानी बर निकलथें। पानी ओछ्छके, गुलाल लगाके, दीया जलाके अउ आदर-सत्कार करके यादव ग्वाल-बाल मन के स्वागत करथें। ए दृश्य म अतिथि सत्कार के संग-संग गांव के आपसी प्रेम अउ अपनापन के सुंदर झलक दिखथे।

घर के भीतर प्रवेश करे के बाद ग्वाल-बाल मन सबले पहिली घर के धारण देवता के पूजा-अर्चना करथें। फेर गौमाता के महिमा गावत दोहा पारथें। गौ माता ल सोहई बांधे के बेरा कहिथे -

गाय कहेव मोर बलही संगी, बीता बीता ओकर काने।
बरन पाट के फुंदरा, तोर गर लानेव पहिराए।

आनी बानी के सोहई गौ माता ल पहिराथे -

धंधा बांधव पचेडी संगी, अउ गांठ दिए हरैया।
पूजा होवत हे गौ माता के, छहित रहे गौरैया।।

कारी अउ भूरी गाय के मया, ओकर सेवा अउ चार महीना के चरवाही के अपन अलग लोककथा हे। दोहा के माध्यम ले ग्वाल-बाल मन गाय के प्रति अपन स्नेह अउ जिम्मेदारी ल प्रकट करथें।

कारी भूरी दुनों बहिनी संगी, बैठे जघिया जोरे।
कारी पूछे भूरी ल, नई दिखे दुहैया तोरे।।

चार महीना चरायव संगी, खाएव दही के बोरा।

आगे दिन देवारी के, छूटव तोर निहोरा।।

ए दोहा मन म केवल गाय के वर्णन नइ हे, बल्कि मनुष्य अउ पशु के बीच के आत्मीय संबंध के अभिव्यक्ति घलो हे।

राम नाम के महिमा बतावत कहिथे कि -

राम नाम सब कोई जपे, ठग ठाकुर अऊ चोर।
बिना प्रेम रीझे नहीं, तुलसी नंद किशोर।।

**लोकगाथा म पुरखा मन के गौरव अउ महाभारत के प्रसंग**-यादव समाज के देवारी म दोहा के माध्यम ले लोकइतिहास, पौराणिक कथा अउ वीरगाथा के अद्भुत संगम देखे ल मिलथे। जय महामाई गढ़ महोबा के अखरा के गुरु बैतालो अउ चौसठ जोगनी के स्मरण करत अपन पुरखा मन के शौर्य अउ गौरव के गाथा गाथें।

**चौसठ जोगनी मोर पुरखा के, जेखर भुजा म रहे सहाय।** -दोहा के सवाल-जवाब म बुद्धि, तर्क अउ लोकज्ञान के सुंदर उदाहरण मिलथे।

कहां देखे दुई आंखी के अंधरा, कहां सुने दुई काने।
धरती से रोटी बड़े संगी, तब कामे साने पिसाने।।
तुरते एकर जवाब चलो देथें-
धरती से रोटी बड़े संगी, कागा लिए उठये।
तोही को पूछव पंडित भैया, ओला कहां बइठ के खाय।।

अइसने दोहा के माध्यम ले महाभारत के कथा अउ आल्हा-ऊदल के वीरगाथा तक के प्रसंग जुड़ जाथे।

पहिली जनम जदु भारत संगी, दूसर म राजा बलराज।
सिर काट के दक्षिणा देवय, त कलियुग म आल्हा अवतार।।

ए लोकगाथा मन यादव समाज के ऐतिहासिक चेतना, वीरता अउ सांस्कृतिक विरासत के परिचायक हवंय।

**प्रकृति अउ जीव-जंतु के प्रति संवेदना**-देवारी के दोहा म प्रकृति अउ पशु-पक्षी मन के प्रति प्रेम के भाव घलो समाय हे। नीलकंठ अउ कागा जइसन पक्षी के माध्यम ले दर्शन अउ कर्म के महत्व ल बताय गे हे।

नीलकंठ कागा भखे, मुख म राखे राम।
करनी से कुछ भी रहे, दर्शन से हे मोला काम।।

अइसने एक दोहा म जोगी, पंडित अउ अहीर समाज के परंपरा के सुंदर उल्लेख मिलथे-

जोगी के जनम जोग म भाई, त पंडित बेद पुरान।
अहीरा के जनम पररू बछरू, लिख भेजे भगवान।।

ए दोहा मन म लोकजीवन के अनुभव, धार्मिक आस्था अउ अपन समाज के पहिचान के भाव झलकथे।

यादव भाई मन अपन आराध्य श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति प्रकट करत कहिथें-

जनम होतीस मोरो अहीर के घर म, बन-बन बंशी बजातेव।
एके पोरसना भात ल खातेव, दूसइय्या म गोरस मंगातेव।।

ए पंक्ति म भगवान श्रीकृष्ण के ग्वाल-बाल जीवन के प्रति अपनत्व अउ भक्ति के अनुपम भाव हे।

आगे पूजा के समय दोहा के स्वर गूंजथे-

पूजा करे पुजेरी संगी, धोवा चाऊरे चढ़ाये।
पूजा होवत हे मोर कृष्ण कन्हैया के, धरम धजा फहराये।।

भाई-बहिनी अउ माता-पिता के स्नेह ल समर्पित करत कहिथें-

भाई दुलारे बहिनी संगी, बहिनी दुलारे भई।
हमला दुलारे हमर माता-पिता, जे कच्चा गोरस पियाई।।

दोहा के ए मधुर परंपरा म भक्ति के संग परिवार के मया, माता-पिता के सम्मान अउ समाज के आत्मीयता घलो समाहित हे।

दोहा-गायन अउ पूजा-अर्चना पूरा होय के बाद ठाकुर परिवार के मन यादव भाई मन ल पान, फूल, धोती-कुर्ता, चाऊर, दार अउ दक्षिणा देके सस्मान विदा करथें। बदला म यादव भाई मन परिवार के सुख-समृद्धि बर आशीष देथें-

आवत झोंकेन राम रमउवा, जावत देवो असीसा।
अन्न-धन तोर घर भरे, जुग जिहव लाख बरीसा।।

अइसने मंगलकामना करत नाचत-गावत ग्वाल-बाल मन अगला घर बर निकल पड़थें।

**गोवर्धन पूजा : गौसेवा अउ अन्नपूर्णा दाई के अराधना-**

देवारी के ए उत्सव के सबसे महत्वपूर्ण अउ मनमोहक दृश्य गोवर्धन पूजा के दिन देखे ल मिलथे। गांव के कोठा के आगू मेमरी, सिलयारी अउ बलियारी के डारा-पाना सजाके गोबर ले सुंदर गोवर्धन परबत बनाय जाथे। ओकर संग दू डोंगा बनाके ओमा दूध, दही अउ मही डारे जाथे।

गौमाता के पानी ले गोड़ धोये जाथे। घास-फूस के टांटी बनाके ओमा बरा, सोहरी, मखना, कोचई, दूध, दही अउ गांव म बने अलग-अलग पकवान सजाय जाथे। छप्पन भोग के परंपरा के अनुसार तरह-तरह के पकवान अर्पित करे जाथे।

गौमाता ल बड़े प्रेम ले सुखर खिचरी खवाय जाथे। ओकर जूठा प्रसाद ल मनखे मन श्रद्धा ले ग्रहण करथें। गौमाता के सींग म धान के बाली अउ मेमरी-सिलयारी ले बने सिंगोलिया पहिराय जाथे। ए सबो अनुछान म प्रकृति, कृषि अउ पशुधन के प्रति आभार के भावना समाय हे।

किसान के जीवन म गाय के महत्व अतका गहिर हे कि खेती-किसानी के हर काम म ओकर योगदान ला सम्मान देय जाथे। दूध, दही, घी, गोबर अउ खेती के काम म उपयोगी पशुधन गांव के अर्थव्यवस्था के मजबूत आधार रहिन हवंय। एखरे सेती गोवर्धन पूजा केवल धार्मिक अनुष्ठान नइ, बल्कि कृषि संस्कृति अउ पशुधन के सम्मान के तिहार आय।

**काछन चढ़े के परंपरा अउ गोवर्धन भाठा के सामूहिक पूजा-** गोवर्धन पूजा के दिन यादव भाई मन अपन-अपन घर म देव-धामी ल सुमिरथें। पूजा-अर्चना करके पारंपरिक दोहा पारथें अउ काछन चढ़थें। काछन चढ़े के ए परंपरा म कुलदेवता अउ पुरखा मन के प्रति श्रद्धा के भाव जुड़े रहिथे।

एक काछ काछेव संगी, वहू गए भुलाय।

दूसर काछ काछेव संगी, मोर माता-पिता के परे दुहराय।।

घर के पूजा पुरा होय के बाद अपन घर-परिवार के भार देवता ल सौंपके सबो यादव भाई मन गोवर्धन भाठा बर निकलथें।

रास्ता म नाचत-गावत दोहा पारत अपन लोकपरंपरा के निर्वहन करथें-

कुकरी लेबे चिंगरी संगी, अउ लेबे खून के धारे।

मैं जावत हों गोवर्धन भाठा, तोला लगे घर के धारे।।

गोवर्धन भाठा पहुंचके साहंडा देवता के पूजा करथें। झुम-धूप अउ जग देके गौमाता अउ गोवर्धन परबत के पूजा करथें। गोवर्धन के प्रतीकात्मक रूप म माटी-गोबर के परबत खनके एक-दूसर ल टीका लगाथें अउ आशीर्वाद लेथें।

ए बेरा पूरा समाज एक संग एकजुट होथे। जात-पात, ऊंच-नीच, अमीरी-गरीबी के भेदभाव भुलाके सबो झन एक-दूसर के गले मिलथें। साल भर के मनमुटाव, लुहाई-झगड़ा अउ पुराना दुश्मनी ल भुलाके नवा संबंध के शुरुआत करथें।

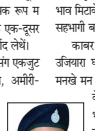

गोवर्धन भाठा के ए पवित्र स्थल म केवल पूजा नइ होवय, बल्कि मनखे मन के मन घलो जुड़थे। इहां भाईचारा, एकता, प्रेम, सौहार्द अउ सामाजिक समरसता के संदेश चारों मुड़ा फैलथे।

**अन्नपूर्णा दाई के जोहार अउ सुख-समृद्धि के कामना**-गोवर्धन पूजा के बाद गोवर्धन ल विधि-विधान ले कोठी म छबे के परंपरा हे। कोठी म अन्न के भंडार भरना सुख-समृद्धि के प्रतीक माने जाथे। ए बेरा अन्नपूर्णा दाई के जोहार करके घर-परिवार म अन्न-धन के कमी न होवय, खेती-किसानी म बरकत आवय अउ सबो के जीवन खुशहाल रहय, एही कामना करे जाथे।

देवारी के ए पूरा परंपरा म एक बात साफ दिखथे कि हमर पुरखा मन तिहार ल केवल मनोरंजन तक सीमित नइ रखिन, बल्कि ओकर भीतर जीवन के जरूरी संस्कार, प्रकृति के सम्मान, पशुधन के संरक्षण, अतिथि सत्कार, पारिवारिक प्रेम अउ सामाजिक एकता के गहिर संदेश समो के रखिन।

आज के बदलत समय म घलो यादव समाज के देवारी हमर लोकसंस्कृति के अमूल्य धरोहर आय। ढोल-मांदर के थाप, दोहा के गूंज, ग्वाल-बाल मन के नाच, गौमाता के सेवा अउ गोवर्धन भाठा के सामूहिक पूजा हमर गांव-गंवई के असली पहिचान आय।

देवारी के दीया हमन ला सिखाथे कि जइसे एक छोटे दीया के उजियारा अंधियारी ल दूर कर देथे, वइसने मनखे के मन म बसे प्रेम, सद्भाव अउ भाईचारा समाज के हर बुराई ल दूर कर सकथे।

आवव, हमर पुरखा मन के ए अनमोल परंपरा ल संजो के रखन। अपन लोकभाषा, लोकगीत, दोहा अउ लोकसंस्कृति के सम्मान करन। गौमाता अउ प्रकृति के रखा करन। मन के बैर-भाव मिटाके एक-दूसर के सुख-दुख म सहभागी बनन।

कामना कि देवारी के असली उजियारा घर के दीया म नइ, बल्कि मनखे मन के मन म जलथे। जिहं प्रेम के बाती, सद्भाव के तेल अउ भाईचारा के उजियारा होथे, उही घर-परिवार अउ समाज सच्चा अर्थ म सुखी अउ समृद्ध होथे। जय श्री कृष्णा

**अर्जुन धनंजय सिन्हा,**
**शिक्षक, छुरा**